बधईया बाज रही (देवउठनी एकादशी)

(बधईया बाज रही)

धुनः मथे ते चमकन बाल अज मेरे बनड़े दे

हो रहा मंगलाचार, बधईया बाज रही।
बाज रही बधईया बाज रही-हो रहा मंगलाचार।।

देवउठनी एकादशी आई,
कार्तिक-शुक्ल सुकाल-बधईया.....
बनी दुल्हनियां तुलसां रानी,
दुल्हा हरि सरकार- बधईया.....
देवी देव बने बाराती,
नाच रहा संसार-बधईयां.....
बाज रहे बाजे शहिनाईयां,
हो रही जय जयकार-बधईया.....
घुंगट में वृंदा शरमावे,
हरि को हर्ष आपार-बधईया.....
कहै "मधुप" यह पावन गाथा,
देती है फल चार-बधईया..... ।

कवि : सुप्रसिद्ध लेखक एवं संकीर्तनाचार्य श्री केवल कृष्ण **'मधुप'** (मधुप हरि जी महाराज) अमृतसर (9814668946)

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/33198/title/badhaiya-baaj-rahi-----devuttni-ekadashi--

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |